तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 62

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

तदनन्तर, शुभोपयोगी श्रमणों की प्रवृत्ति बतलानेवाली गाथा 247 इसप्रकार है ह्न

वंदणणमंसणेहिं अब्भुट्ठाणाणुगमणपडिवत्ती।
समणेसु समावणओ ण णिंदिदा रागचरियम्हि।।२४७।।

(हरिगीत)

श्रमणजन के प्रति बंदन नमन एवं अनुगमन।
विनय श्रमपरिहार निन्दित नहीं हैं जिनमार्ग में।।२४७।।

श्रमणों के प्रति वन्दन, नमस्कार सहित अभ्युत्थान और अनुगमनरूप विनीत प्रवृत्ति करने तथा उनका श्रम दूर करनेरूप रागचर्या निन्दित नहीं है।

इस गाथा में श्रमणों के प्रति वन्दन, नमस्कार, अभ्युत्थान एवं अनुगमनरूप प्रवृत्ति तथा उनके श्रम दूर करने को निंदा करने योग्य नहीं लिखा। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि भाषा ऐसी है कि 'निन्दित नहीं है' यहाँ ये सब अच्छी हैं, यह नहीं लिखा।

मुझे तो ऐसा लगता है कि यह गाथा सीधे मुमुक्षुओं के लिए लिखी गई हो तथा यदि स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो यह गाथा शुभोपयोग के कारण मुनियों की निन्दा करनेवालों के लिए लिखी गई है। इन क्रियाओं से मोक्ष नहीं होगा, अपितु बन्ध ही होगा; लेकिन उस भूमिका में ये क्रियायें निन्दा योग्य भी नहीं हैं।

इसी संबंध में इसी गाथा की टीका का भाव इसप्रकार है ह्न

''शुभोपयोगियों के शुद्धात्मा के अनुरागयुक्त चारित्र होता है; इसलिए जिन्होंने शुद्धात्मपरिणति प्राप्त की है ह्न ऐसे श्रमणों के प्रति जो वन्दन, नमस्कार, अभ्युत्थान, अनुगमनरूप विनीत वर्तन की प्रवृत्ति तथा शुद्धात्म-परिणति की रक्षा की निमित्तभूत ऐसी जो श्रम दूर करने की वैयावृत्यरूप प्रवृत्ति है; वह शुभोपयोगियों के लिये दूषित (दोषरूप, निन्दित) नहीं है। अर्थात् शुभोपयोगी मुनियों के ऐसी प्रवृत्ति का निषेध नहीं है।''

'शुभोपयोगियों के ही ऐसी प्रवृत्तियाँ होती हैं' ह्न ऐसा प्रतिपादन करनेवाली गाथा 248 इसप्रकार है ह्न

दंसणणाणुवदेसो सिस्सग्गहणं च पोसणं तेसिं।
चरिया हि सरागाणं जिणिंदपूजोवदेसो य।।२४८।।

(हरिगीत)

उपदेश दर्शन-ज्ञान-पूजन शिष्यजन का परिग्रहण।
और पोषण ये सभी हैं रागियों के आचरण।।२४८।।

दर्शन-ज्ञान का (सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान का) उपदेश, शिष्यों का ग्रहण, तथा उनका पोषण और जिनेन्द्र की पूजा का उपदेश वास्तव में सरागियों की चर्या है।

गाथा में कथित शिष्यों के ग्रहण का तात्पर्य है दीक्षा देना, तथा पोषण करने का तात्पर्य रोटी-दाल खिलाना नहीं है; अपितु तत्त्वज्ञान में पुष्ट करना है; क्रियाओं में उनकी वृत्ति नहीं बिगड़े ह्न इसप्रकार सम्हाल करना है। मुनिराजों के शुभोपयोग की सीमा उपदेश देना, दीक्षा देना, मुनियों का पोषण और जिनेन्द्र भगवान की पूजा के उपदेश तक ही है।

इसके बाद आचार्यदेव शुभोपयोगी श्रमण के संयम के साथ विरोधवाली प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए ह्न ऐसा कहते हैं ह्न

जदि कुणदि कायखेदं वेज्जावच्चत्थमुज्जदो समणो।
ण हवदि हवदि अगारी धम्मो सो सावयाणं से।।२५०।।

(हरिगीत)

जो श्रमण वैयावृत्ति में छहकाय को पीड़ित करें।
वह गृही ही है क्योंकि यह तो श्रावकों का धर्म है।।२५०।।

यदि श्रमण वैयावृत्ति के लिये उद्यमी वर्तता हुआ छह काय को पीड़ित करता है तो वह श्रमण नहीं है, गृहस्थ है; क्योंकि वह छहकाय की विराधना सहित वैयावृत्ति श्रावकों का धर्म है।

अब यहाँ आचार्यदेव मुनिराजों के शुभोपयोग की मर्यादा का वर्णन कर रहे हैं कि मुनिराज का शुभोपयोग किसप्रकार का हो सकता है तथा किसप्रकार का नहीं हो सकता ?

जैसे ह्न कोई मुनिराज बीमार हो गए एवं उन्हें इलाज की जरूरत है। अब यदि कोई मुनिराज उनके लिए या अपने गुरु के लिए गृहस्थ से बातचीत करते हैं तो वे निंदित नहीं है; किन्तु अपने लिए करते हैं तो वे निंदित हैं। गृहस्थ से बातचीत इसलिए करनी पड़ेगी; क्योंकि मुनिराज को दवाई तो आहार में ही दी जा सकती है, वह भी 24 घंटे में एक बार बीमारी के हिसाब से दी जाएगी; लेकिन यदि पहले से व्यवस्था नहीं होगी या किसी अच्छै वैद्य को नहीं दिखाया गया तो यह सब सम्भव नहीं होगा। अतएव इस संबंध में यदि गृहस्थ से बातचीत की जाती है तो वह निंदित नहीं है; लेकिन यदि कोई मुनिराज इसी का ही आश्रय लेकर कल यह बना लेना, आज लौकी बना लेना, यह नहीं बनाना ह्न ऐसी चर्चा होने लग जाए तो अनर्थ की बात हो जाएगी।

हमें इस बात पर बहुत गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि वे मुनिराज भी मनुष्य हैं तथा ऐसी मनुष्यगत कमजोरियाँ हममें हैं; वैसी ही कमजोरियाँ उनमें भी हैं। वे मात्र मनुष्य ही नहीं हैं; अपितु हमसे महान भी हैं, गुरु भी हैं, व्रती भी हैं। हमें तो यह समझना चाहिए कि सच्चे भावलिंगी हैं। यदि हम ऐसी कड़क निगाह रखेंगे तो वे भावलिंगी भी भूखों मर जाएंगे, मोक्ष नहीं जा पाएंगे।

एक ओर जहाँ महाभ्रष्टता है, वही दूसरी ओर लोगों की वाणी और निगाह में इनके प्रति कड़कता आ गई है। मुझे तो कभी-कभी यह डर लगता है कि ऐसे में यदि आचार्य कुन्दकुन्द भी आ जाए, तो मुमुक्षुओं को वे भी पसन्द नहीं आयेंगे।

इन सब बातों का विचार कर लोगों को भी एक बार यह विचार करना चाहिए कि मुझे सच्चा मुनिराज बनना है तथा ये सारी परिस्थितियाँ मेरे ऊपर आएगी, तब मेरे परिणाम कैसे होना चाहिए ?

अरे भाई ? मुनिराज बने बिना तो कोई भी मोक्ष जानेवाला नहीं है;

अतएव मुनिराज तो बनना ही होगा तथा सारी वस्तुस्थिति अपने ऊपर घटित करके देखना चाहिए। इन बातों को विचारने से हमारा दृष्टिकोण भी बदलकर संतुलित होगा।

मैं जो भी इसमें लिख रहा हूँ, वह अपने मन से नहीं लिख रहा हूँ, आगम के आधार से लिख रहा हूँ, साथ में मूल गाथाएँ एवं उनकी टीकाएँ भी मूलत: दे रहा हूँ।

गाथा २५० की टीका का भाव इसप्रकार है ह्न

''जो श्रमण दूसरे की शुद्धात्मपरिणति की रक्षा हो ह्न ऐसे अभिप्राय से वैयावृत्य की प्रवृत्ति करता हुआ अपने संयम की विराधना करता है; वह गृहस्थधर्म में प्रवेश कर रहा होने से श्रामण्य से च्युत होता है। इससे ऐसा कहा है कि जो भी प्रवृत्ति हो, वह सर्वथा संयम के साथ विरोध न आये ह्न इसप्रकार ही करनी चाहिए; क्योंकि प्रवृत्ति में भी संयम ही साध्य है।''

टीका में यह कहा है कि यदि एक मुनिराज को तकलीफ हो तथा दूसरे मुनिराज उनकी सेवा कर रहे हैं। अब यदि वे मुनिराज इस स्तर पर सेवा करने लग जाए कि स्वयं की सामायिक ही छूट जाए अथवा पैर दबाते-दबाते किसी गृहस्थ से बातें करने लग जाए ह्न इसप्रकार संयम की विराधना जो श्रमण करता है, वह श्रामण्य से च्युत होता है। उनका चित्त संयम में स्थिर हो ह्न इस भावना से की गई सेवा से स्वयं का संयम खो देना बुद्धिमानी नहीं है। अपना सारा काम छोड़कर मुनिराज की सेवा गृहस्थ ही करते हैं। यदि मुनिराज स्वयं के सब काम छोड़कर सेवा करने में लग जावें तो वे भी गृहस्थ ही हैं।

इसके बाद, प्रवृत्ति के विषय के दो विभाग बतलानेवाली गाथा २५१ की टीका भी दृष्टव्य है ह्न

''जो अनुकम्पापूर्वक परोपकारस्वरूप प्रवृत्ति करने से यद्यपि अल्प लेप तो होता है, तथापि अनेकान्त के साथ मैत्री से जिनका चित्त प्रवृत्त हुआ है ह्न ऐसे शुद्ध जैनों के प्रति - जो कि शुद्धात्मा के ज्ञान-दर्शन में प्रवर्तमान वृत्ति के कारण साकार-अनाकार चर्यावाले हैं, उनके प्रति, शुद्धात्मा की उपलब्धि के अतिरिक्त अन्य सबकी अपेक्षा किये बिना ही, उस प्रवृत्ति के करने का निषेध नहीं है; किन्तु अल्प लेपवाली होने से सबके प्रति सभी प्रकार से वह प्रवृत्ति अनिषिद्ध हो ह्न ऐसा नहीं है; क्योंकि वहाँ (अर्थात् यदि सबके प्रति सभी प्रकार से की जाय तो) उसप्रकार की प्रवृत्ति से पर के और निज के शुद्धात्मपरिणति की रक्षा नहीं हो सकती।''

इस टीका में आचार्य यह कहना चाहते हैं कि मुनिराज दूसरों की सेवा का ऐसा कोई काम न करें कि वे स्वयं अपने संयम से च्युत हो जाए।

अपने यहाँ एक कहावत है कि **'दूसरों को जिमाने के चक्कर में खुद ही भूखे रह गए'** लेकिन जैनदर्शन में खुद भूखे रहकर जिमाने की बात नहीं है अर्थात् दूसरों के संयम की रक्षा के लिए स्वयं का संयम छोड़ देने की बात जैनदर्शन में नहीं है।

इसप्रकार यहाँ तक यह बात स्पष्ट की जा चुकी है कि सेवा करनेवाले मुनिराज कैसे हो, तथा जिनकी सेवा की जाए वे मुनिराज कैसे हो।

इस संबंध में मैं यह बताना चाहता हूँ कि ऐसे गृहस्थ जो स्वयं भ्रष्ट हैं, उनके द्वारा की गई मुनियों की सेवा वैयावृत्ति नहीं है। आजकल तो लोग अस्पताल खोलने को भी वैयावृत्ति कहने लगे हैं, आज जितने भी अरबपति और करोड़पति हैं; वे सभी अस्पताल खोलने की तैयारी में हैं।

हिंसक दवाओं से सप्त व्यसनों में पारंगत लोगों का इलाज करना वैयावृत्ति नहीं है।

मैं यह सब इसलिए बता रहा हूँ कि लोग अस्पताल खोलने को भी वैयावृत्ति समझते हैं। हम यदि एक गोली खाए तो महाभ्रष्ट पंडित तथा जहाँ उन गोलियों का पूरा दवाखाना ही खुल रहा हो, वह वैयावृत्ति ?

जिनकी शुद्धात्मपरिणति है तथा जो धर्मात्मा हैं, वे धर्म में स्थिर रहें - इसके लिए सेवा करना वैयावृत्ति है; किन्तु जिनमें धर्म का अंशमात्र भी नहीं है, उनकी सेवा में जिन्दगी लगा देना वैयावृत्ति नहीं है।

इसी संबंध में गाथा २५१ का भावार्थ भी द्रष्टव्य है ह्न

''यद्यपि अनुकम्पापूर्वक परोपकारस्वरूप प्रवृत्ति से अल्प लेप तो होता है; तथापि यदि (1) शुद्धात्मा की ज्ञानदर्शनस्वरूप चर्यावाले शुद्ध जैनों के प्रति, तथा (2) शुद्धात्मा की उपलब्धि की अपेक्षा से ही, वह प्रवृत्ति की जाती हो तो शुभोपयोगी के उसका निषेध नहीं है; परन्तु यद्यपि अनुकम्पापूर्वक परोपकारस्वरूप प्रवृत्ति से अल्प ही लेप होता है; तथापि (1) शुद्धात्मा की ज्ञानदर्शनरूप चर्यावाले शुद्ध जैनों के अतिरिक्त दूसरों के प्रति तथा (2) शुद्धात्मा की उपलब्धि के अतिरिक्त अन्य किसी भी अपेक्षा से, वह प्रवृत्ति करने का शुभोपयोगी के निषेध है; क्योंकि इसप्रकार से पर को या निज को शुद्धात्मपरिणति की रक्षा नहीं होती।''

भावार्थ में यह लिखा है कि जो शुद्धात्मा के साधक हैं; उनकी शुद्धात्मा की प्रवृत्ति की सुरक्षा में साधनभूत सेवा करना ही वैयावृत्ति है।

अरे भाई ! यदि किसी को कुछ देना हो तो शास्त्र देना; जिसे वह पढ़ेगा तथा माथे पर रखेगा तथा जिनबिम्ब दो; जिनके सारी दुनिया दर्शन करेगी। देव-शास्त्र-गुरु आत्मकल्याण में निमित्त होते हैं।

पाँच इन्द्रियों के विषयों की सामग्री देने से क्या लाभ है; क्योंकि वह तो अपने लिए हर कोई जुटाता है, यदि हम भी वही सामग्री जुटाकर देंगे तो क्या फायदा है ? **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 से 19 नवम्बर, 06	**दिल्ली**	**विद्वत्परिषद-शिविर**
30 नव. से 6 दिसम्बर, 06	**बांसवाड़ा**	**पंचकल्याणक**
24 दिस. से 28 दिसम्बर	**देवलाली**	**विधान एवं शिविर**
23 से 25 जनवरी, 07	**चन्देरी**	**छहढाला शिविर**
25 से 31 जनवरी, 07	**बीना**	**पंचकल्याणक**
02 से 06 फरवरी, 07	**मंगलायतन**	**वार्षिकोत्सव**
15 से 21 फरवरी, 07	**अलवर**	**पंचकल्याणक**

2 नवम्बर 2006, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

(आगामी कार्यक्रम ...)

विद्वत्परिषद् द्वारा शिक्षण शिविर का आयोजन

दिल्ली। श्री अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् (पंजि.) एवं जैन समाज सूरजमल विहार दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर सूरजमल विहार में दिनांक 10 से 19 नवम्बर, 06 तक दस दिवसीय छहढाला शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर दिनांक 13 से 19 नवम्बर तक विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के छहढाला पर प्रतिदिन विशेष प्रवचन होंगे।

आपके अतिरिक्त इस शिविर में डॉ. राजाराम जैन नोएडा, प्रा. नरेन्द्रप्रकाश जैन फिरोजाबाद, डॉ. सुदर्शनलाल जैन वाराणसी, डॉ. दामोदर शास्त्री दिल्ली, डॉ. सुरेशचन्द जैन दिल्ली, डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. सुदीप जैन दिल्ली, पण्डित शान्तिकुमार पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागर जैन दिल्ली, डॉ. अशोक गोयल शास्त्री दिल्ली तथा श्री अनूपचन्द जैन एडवोकेट फिरोजाबाद छहढाला का मर्म समझायेंगे।

ज्ञातव्य है कि अन्तिम दिन डॉ. अशोक गोयल शास्त्री को धार्मिक चेतना जागृति के लिये विद्वत्परिषद के पूर्व अध्यक्ष हितैषीजी की स्मृति में दिया जानेवाला **पण्डित प्रकाशचन्द हितैषी स्मृति पुरस्कार** डॉ. भारिल्ल के करकमलों से प्रदान किया जायेगा। **ह्न अखिल बंसल**

हार्दिक शुभकामनायें !

1. जबलपुर (म.प्र.) : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **श्री श्रेयांसकुमार शास्त्री, जबलपुर** को एम.ए. संस्कृत विभाग में सर्वोत्कृष्ट अंक प्राप्त करने पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा आयोजित दीक्षांत समारोह में **राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम** द्वारा तीन स्वर्ण पदकों से सम्मानित किया गया।

साथ ही जबलपुर मुमुक्षु मंडल के युवा विद्वान **पण्डित मनोज जैन** को उनके शोध कार्य '**आचार्य उमास्वामी व्यक्तित्व्य कर्तृत्व**' पर पी. एच. डी. की उपाधि से एवं मंडल की ही सक्रिय सदस्या **श्रीमती पूजा अनुभव जैन** को एल. एल. बी. विभाग में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। **ह्न विराग शास्त्री (अध्यक्ष)**

2. लखनऊ (उ.प्र.) : न्यायमूर्ति लोकायुक्त श्री एन.के. मेहरोत्राजी के मुख्यातिथ्य में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **डॉ. विमलकुमार जैन जयपुर** को उनके द्वारा शैक्षिक, साहित्यिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में की गई उल्लेखनीय सेवाओं के लिए प्रशस्ति पत्र, 21000/- रुपये की राशि के साथ **विश्व मैत्री सेवा सम्मान 2006** प्रदान कर सम्मानित किया गया। आपको पहले भी राज. सरकार व विश्वविद्यालय आदि की ओर से सम्मानित किया जा चुका है।

उक्त सभी को जैनपथप्रदर्शक समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनायें !

वैराग्य समाचार

1. जयपुर निवासी श्री रमेशचन्दजी गोधा का दिनांक 18 अक्टूबर को देहविलय हो गया है। आप श्री टोडरमल स्मारक भवन में चलनेवाली स्वाध्याय सभा का दोनों समय नियमित लाभ लिया करते थे। आपके हृदय में वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की उत्कृष्ट भावना रहा करती थी। स्मारक ट्रस्ट द्वारा चलनेवाली समस्त गतिविधियों में आपका सदैव सहयोग रहता था।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक पण्डित सुनीलकुमार नाके की माता **श्रीमती वसन्तमाला दिगम्बरराव नाके,** डासाला (महा.) निवासी का दिनांक 16 अक्टूबर, 2006 को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त सरल स्वभावी, धार्मिक महिला थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान (मराठी) हेतु 201/-रुपये की राशि प्राप्त हुई है।

3. ललितपुर निवासी श्रीमती शीलन टड़ैया धर्मपत्नी स्व.सेठ निहालचन्द टडैया का दिनांक 23 सितम्बर को शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 1001/-रुपये की राशि प्राप्त हुई है।

4. कोटा निवासी श्रीमती चन्द्रकलाजी रांवका का देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री मुकेशजी रांवका द्वारा जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1100/-रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण की प्राप्ति करें - यही भावना है।

यात्रिक आश्रम का निर्माण

श्रवणबेलगोला (कर्ना.) : श्री निमेशभाई शांतिलाल शाह तथा श्री अनन्तभाई ए. सेठ परिवारों के अथाह परिश्रम और सहयोग से श्रवणबेलगोला में भगवान बाहूबली मस्तकाभिषेक के अवसर पर 22 कमरे व दो विशाल हॉल से सुसज्जित **पूज्य श्री कानजीस्वामी यात्रिक आश्रम** का नवनिर्माण सम्पन्न हुआ है। जो भी मुमुक्षु भाई इस आश्रम का लाभ लेना चाहते हैं, वे दस दिन पूर्व निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

- श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, 302, कृष्णकुंज, प्लाट 30, नवयुग कॉ.ओ. सो., वी.एल. मेहता मार्ग, एच.डी.एफ.सी. बैंक के ऊपर, विलेपार्ले (वे.), मुम्बई-56, फोन नं. 022-26130820

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
फैक्स : (0141) 2704127